International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

श्वेता तिवारी
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती(मानित विश्वविद्यालय)
प्रयागराज विश्वविद्यालय)

Article Info
Volume 7, Issue 6
Page Number: 366-371
Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 10Dec 2020
Published : 24 Dec 2020

सारांश

शिक्षा सप्रयोजन, सचेष्ट तथा अविरल गतिशील एक वह सामाजिक प्रक्रिया है जो हर पल, हर परिस्थिति में व्यक्ति के समस्त व प्रगतिशील विकास को अंजाम देती है। शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक स्तर की शिक्षा का बहुत महत्व है इसलिए इस स्तर के अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद के ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लेकर डाटा एकत्रित करने के बाद सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुआ। चूंकि छात्र–छात्राओं की अभिरूचि अनुसार अभिप्रेरित करता तथा मूल्यों का विकास, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों का निर्धारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन एक ऐसा ही प्रयास है।

मूल शब्द– सप्रयोजन, अविरल, प्रभाव, समरस, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थियों।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना–

शिक्षा वह जननी है जो शिक्षा को जन्म देती है और निरन्तर गतिशील रहकर नव निर्मित शिक्षा का निर्माण करती रहती है और इस प्रकार जीवन पर्यन्त चलती रहती है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव, चिन्तन एवं दृष्टिकोण अलग–अलग होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को अपने तरीके से स्पष्ट करने और परिभाषित करने का प्रयास करता है। कोई शिक्षा को सार्वभौमिक दृष्टिकोण से देखता है तो कोई एकांगी दृष्टिकोण से तो कोई आध्यात्मिक तथा विविध दार्शनिक सम्प्रदायों के रूप में शिक्षा की व्याख्या करते हैं तो अन्य लोग सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक आदि परिप्रेक्ष्य को महत्व देते है। व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही उसका शिक्षा काल होता है। शिक्षा सप्रयोजन, सचेष्ट, अविरल गतिशील वह सामाजिक प्रक्रिया है जो हर पल, हर परिस्थिति में मानव के समरस, प्रगतिशील विकास को अंजाम देती है। प्राचीन काल में शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही सीमित था। छात्रों की आवश्यकतायें, परिस्थितियों, क्षमताओं, रूचियों का शिक्षा क्रिया में कोई स्थान नहीं था लेकिन शिक्षा में मनोविज्ञान सम्मिलित होने से बालकों को समझने तथा शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में अधिक प्रयास होने

लगे इसलिए शिक्षा को हमेशा से ही राष्ट्र तथा समाज की प्रगति का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है क्योंकि शिक्षा व्यवस्था को प्रभावशाली बनाकर ही राष्ट्र को प्रगतिशील व विकासशील बनाये रखा जा सकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में हमें यह याद रखना चाहिए कि जीवन का वृक्ष लोहे के ढाँचे से बिल्कुल भिन्न हैं। यदि हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके निर्धनता को दूर करना चाहते है तो ललित कलाओं द्वारा मस्तिष्क की हीनता को भी दूर किया जाना चाहिए। केवल भौतिक दरिद्रता ही दुःख का कारण नहीं है। हमें समाज के हितों को ही नहीं, वरन् मानव हितों को भी सन्तुष्ट करना चाहिए। सौन्दर्यात्मक और आध्यात्मिक उत्कर्ष पूर्ण मानव के निर्माण में योग देता हैं। मानव के निर्माणकारी पहलू का विकास कला द्वारा होता है। सारांशः– शिक्षा को मनुष्य और समाज दोनो का निर्माण करना चाहिए। भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की नींव शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। ग्रामीण एवं शहरी जीवन दो परस्पर विरोधी चित्रों को प्रस्तुत करता है। दोनों ही के अपने–अपने नकारात्मक एवं सकारात्मक पहलू है जो व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह ग्रामीण या शहरी किसी भी वातावरण के माहौल में रहते हुए नकारात्मक पहलू की परवाह किए बगैर उपलब्ध अवसरों का अधिक से अधिक लाभ कैसे उठाएं। शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी उपलब्धता ग्रामीण स्कूलों की चिन्ता का प्रमुख विषय हैं। क्योंकि गाँव हो या शहर दानों स्तर पर प्रारम्भिक वातावरण, अभिरूचि, कौशल, सीखने की क्षमता, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और विभिन्न सुविधाओं की पहुँच एक बड़ा अंतर है क्योंकि शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक स्तर की शिक्षा का बहुत महत्व है। इस स्तर पर बालक–बालिका के मानसिक विकास में तेजी से सोचने–समझने की शक्ति, अलग–अलग क्षेत्रों में अभिरूचि दिखाना और उसी प्रकार अपने लक्ष्य का निर्धारण करने लगना, जैसी प्रक्रिया की शुरूआत हो जाती है। ग्रामीण और शहरी

दोनों वातावरण में बालक–बालिका के व्यवहारिक, मानसिक, सामाजिक विकास में परिवार समाज एवं विद्यालय का प्रमुख स्थान होता है। वो क्या और कैसे करेगा यह सब बालक–बालिका के अभिरूचियों द्वारा ही निर्धारित होता है। अभिरूचि एक प्रकार की अर्जित अभिप्रेरणायें है जो व्यक्ति के कार्य विशेष को सम्पन्न करने के लिए अभिप्रेरित करती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक के अनुसार व्यवहार को संचालित, निर्देशित, संगठित करने वाली शक्ति अभिप्रेरणा है। यह वह आन्तरिक शक्ति और बाह्य शक्ति है जो बालक–बालिका को अपने लक्ष्य के प्रति कार्य करने के लिए उत्साहित या प्रेरित करती है। अभिप्रेरणा का सही तरीके से प्रयोग करके सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को और भी अच्छे तरीके से सम्पादित किया जा सकता है हम किसी भी कार्य को क्यों करते हैं? ये 'क्यों' शब्द का सम्बन्ध प्रेरणा से ही होता है। अभिप्रेरित बालक–बालिका कार्य को शीघ्रता, सरलता, सहजता तथा सुगमता से सीखते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। प्रत्येक बालक–बालिका जीवन के हर एक परिस्थितियों एवं वातावरण के सर्म्पक में आते है जिसके कारण उसमें विभिन्न अनुभवों के प्रभाव वश उसमें अलग–अलग प्रवृत्तियों, आदतों, अभिरूचियों एवं अभिप्रेरणाओं का विकास होता है। जब बालक–बालिका अभिप्रेरित हो किसी कार्य को करने लगते है तो अपने उद्देश्य के प्रति प्रयासरत होते है, वे अपने ही कुछ नियम आदर्श बना लेते हैं एवं दिशा–निर्देशित होने के लिए मूल्य निर्धारित करते है। क्योंकि लक्ष्य तक पहुँचने में हमारे मूल्य अत्यन्त सहायक होते है। मूल्य ही व्यक्ति के वे आदर्श, विश्वास, मानक है जो उसके जीवन चक्र को निर्देशित करते है और हमारे व्यवहार शैली को निर्धारित करते है। बिना मूल्यों के शिक्षा का और बिना शिक्षा के बालक–बालिका का विकास संभव नहीं है।

माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की शिक्षा का दायित्व शिक्षक पर तो रहता है परन्तु अभिभावक एवं उनके आस–पास के वातावरण समाज का प्रभाव भी बालक–बालिका पर पड़ता है। बालक–बालिका की उन्नति सफलता कुछ कारण जैसे–पाठ्यक्रम, अभिरूचि, लक्ष्य, क्षमता योग्यता आदि पर निर्भर करती है। इस स्तर पर बालक–बालिका को सही दिशा–निर्देश प्रदान करने के लिए उनके सही मूल्यों का विकास होना अति आवश्यक है क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल समाज का योग्य नागरिक बनता है। शैक्षिक दृष्टि से बालक–बलिका की अभिरूचि को पहचान कर ही दिशा–निर्देश देकर, उचित वातावरण, उचित पाठ्यक्रम, सुविधाएं पर्याप्त अवसर प्रदान कर एवं अभिप्रेरित कर उनके सर्वोत्तम विकास का मार्ग प्रशस्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिससे उनके सही मूल्यों का विकास हो सके और अपने निर्धारित लक्ष्य एवं उत्तम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अग्रसर रहें।

- **संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण–**

प्रस्तुत शोध में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण निम्न स्रोतों द्वारा किया गया हैः–

1. जर्नल
2. वेबसाइट

3. शैक्षिक पत्रिकाएँ
4. शोध–प्रबन्ध
5. लघु–शोध

- **विशिष्ट शोध उद्देश्य एवं शून्य परिकल्पना–**
  - शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना उद्देश्य बनाया।
  - शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता है, शून्य परिकल्पना बनायी।

जिसे इस चार्ट द्वारा प्रदर्शित किया गया है–

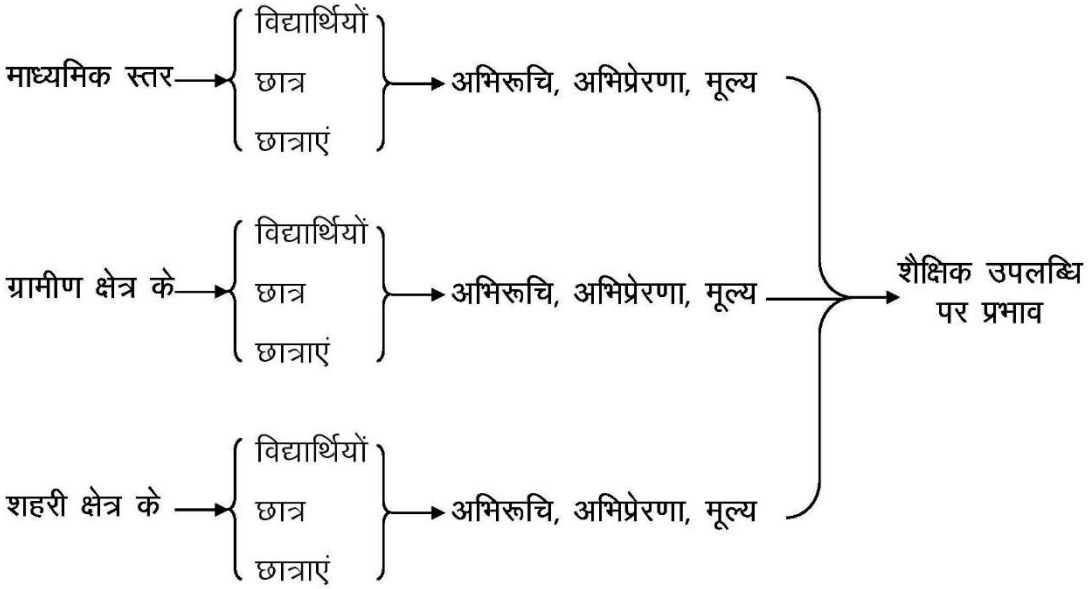

- **शोध विधि–** प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्वतंत्र चर के रूप में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का उनके आश्रित चर के रूप में शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है इसलिए घटनोत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग करते हुये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **जनसंख्या–** प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद के यू0पी0 बोर्ड माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 से 11 में अध्ययनरत बालक–बालिका को जनसंख्या माना गया है।
- **न्यादर्श–** प्रस्तुत शोध में यू0पी0 बोर्ड माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 एवं 11 के 400 बालक–बालिका का चयन न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।
- **उपकरण–** प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण है–

1. **बालक–बालिका की अभिरूचि मापने हेतु** डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज, देहरादून की प्रमाणीकृत प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है।

2. **बालक–बालिका के मूल्य मापने हेतु** डॉ0 (श्रीमती) जी0पी0 शैरी पूर्व निदेशक, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) आगरा, यू0पी0 एवं प्रोफेसर आर0पी0 वर्मा, सेवानिवृत्त, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (यू0पी0) के प्रमाणीकृत प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है।
3. **बालक–बालिका की अभिप्रेरणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि मापने हेतु** डॉ0 टी0आर0 शर्मा प्रोफेसर और डीन (सेवानिवृत्त) शिक्षा संकाय पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के प्रमाणीकृत प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है।

- **प्रयुक्त सांख्यिकीय–** प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

(1) मध्यमान (2) मानक विचलन (3) मानक त्रुटि
(4) टी–परीक्षण (5) एनोवा

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के शोध कार्य पूर्ण होने के उपरान्त निष्कर्ष पाया कि ग्रामीण स्तर हो या शहरी स्तर प्रत्येक वातावरण में बालक–बालिका पर उसके आस–पास के माहौल, रहन–सहन, उनकी शैक्षिक सुविधाओं आदि का मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी स्तर पर प्रभाव पड़ता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शिक्षा का दायित्व शिक्षक पर रहता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विषय तथा अपने उद्देश्य के प्रति सजगता नहीं रहती और अगर रहती भी है तो भ्रम की अवस्था ज्यादा होती है। वे किस विषय को लें, क्या उद्देश्य निर्धारित करें, जैसे बातों में ज्यादा भ्रमित रहते हैं उन्हें अपनी अभिरूचि, क्षमता, योग्यता एवं मूल्यों का पता नही होता अतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव अपेक्षाकृत कम पाया गया, इसलिए इस प्रकार के शोध अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षकों, अभिभावकों द्वारा उचित दिशा–निर्देश देने का प्रयास किया जा सकता है। जिससे उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ सके और वे अपने लक्ष्य का निर्धारण कर उस अनुसार विषय का चयन कर अपने उद्देश्य को हासिल कर सकें, शिक्षा का कार्य मानव की अर्न्तनिहित शक्तियों का विकास है जिससे माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के वातावरण अनुसार समायोजन कर बालक–बालिका स्वयं को जान पाये और अपनी अभिरूचि अनुसार योग्यता, शिक्षा, व्यवहार आदि प्राप्त कर अपने लक्ष्य का निर्धारण करने योग्य बन सकें और समाज के एक सुयोग्य, कर्तव्यनिष्ठ व सजग नागरिक भी बनें क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल समाज का योग्य नागरिक बनता है।

शैक्षिक निहितार्थ–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्त्री द्वारा अपने शोध कार्य हेतु शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किया गया हैः–

- प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- इस शोध अध्ययन द्वारा शिक्षण प्राप्ति हेतु छात्र–छात्राओं के बीच अन्तर नहीं रखा जाये इसका भी ध्यान रखा जा सकता है जिसे सभी छात्र–छात्रायें शिक्षा द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा अभिभावक अपने संतान की रूचियों, क्षमता को जान सकेंगे और पारिवारिक वातावरण अच्छा और अभिप्रेरित रखेंगे जिसमें विद्यार्थी अपने सही लक्ष्य को हासिल करें।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में अभिरूचि के साथ अभिप्रेरणा का बहुत महत्व है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी सभी एक–दूसरे से अभिप्रेरित होकर सुचारू रूप से कार्य किया जा सकता है। विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति अभिप्रेरित किया जा सकेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा विद्यार्थी अपने जीवन के लक्ष्यों के प्रति जागरूक एवं प्रगतिशील है या नहीं इसके प्रति अभिप्रेरित कर सकेंगे।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा व्यवसायिक निर्देशन दिया जा सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- आस्थाना, विपिन (2011), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- भटनागर, ए0बी0 भटनागर, मिनाक्षी, अनुराग, (2003), एजुकेशनल साइकोलॉजी, आर0 लाल बुक डिपो।
- गुप्ता, एस0पी0, गुप्ता, अलका (2007), सांख्यिकीय विधियाँ, पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- गुड, सी0वी0 (1953), इण्ट्रोड्क्शन ऑफ एजूकेशन रिसर्च, सेकेण्ड एडीशन, एपलेट ऑन सेन्चुरी क्राफ्ट इन्स, न्यूयार्क।
- कपिल, एच0के0 (1982), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- माथुर, एस0एस0 (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- नायडु, पी0एस0 (1992), शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- जर्नल्स ऑफ एजुकेशनल टेक्निकल एजुकेशन, 2010
- इण्टरनेशनल ऑफ एकेडमिक रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट
- नई शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिका, 2016
- www.socialsciencestatstics.com
- www.researchgate.net
- www.hofmannverlag.cle